वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

इकाई सं.	इकाई का नाम
1	लिंग: लड़का अथवा लड़की होने का विभिन्न सामाजिक समूहों, क्षेत्रों और समय अवधियों में अर्थ
2	समाज की विविध संस्थाओं (जैसे परिवार, जाति, धर्म, संस्कृति) मीडिया या प्रचलित मीडिया (जैसे सिनेमा, विज्ञापन, गाने आदि) कानून और, राज्य के द्वारा जैंडर संबंधित भूमिकाएं की चुनौतियां और उन को सीखना
3	भारत में बालिका शिक्षा का अवलोकन राजस्थान के विशेष संदर्भ में (ऐतिहासिक परिपेक्ष्य से वर्तमान तक)
4	लिंग सम शिक्षा का संप्रत्ययशिक्षा तक पहुँच और प्रभावित करने वाले कारक, बलिका शिक्षा को असमान करने वाले कारक
5	जैंडर असमानता की चुनौतियां अथवा जैंडर समता की और सुदृढ़ीकरण में विद्यालय, साथियों शिक्षकों पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों आदि की भूमिका
6	विषम लिंग वास्तविकताएं और डोमेन (ग्रामीण् शहरी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति), मुसलमान और विकलांग
7	लैंगिक परिपेक्ष्य (सैद्धांतिक आधार)
8	समाजीकरण की प्रक्रिया, जैण्डर की पहचान का निर्माण विविध संस्थाओं (जैसे परिवार, जाति, धर्म, संस्कृति) मीडिया और प्रचलित मीडिया (जैसे सिनेमा, विज्ञापन, गाने आदि) कानून और राज्य सेक्सुआलेटी की ओर सकारात्मक रवैया का निर्माण
9	सुग्राहयी शिक्षा मे जीवन कौशल आधारित विषयाँ का महत्त्व-समूह शिक्षण (बौद्धिक मंथन) ब्रेन स्टारमिन, एवं दृष्य श्रव्य सांमग्री के संदर्भ में। अध्यापक, परामर्श कर्ता, अभिभावक, समाज (एन.जी.ओ.) के सहयोग एवं भूमिका
10	पाठन-पठन प्रक्रिया में लिंग संवेदीकरण (पाठ्यक्रम का निर्माण (लिंग परिपेक्ष्य में), शिक्षण-प्रशिक्षण में लिंग संवेदीकरण, लिंग संवेदीकरन में वर्तमान trends, मुद्दे और challenges लिंग समानता कक्षा के संदर्भ में विधियाँ pedagogic material बनाने में जिससे लिंग समान शिक्षा हेतु)